



पोषण पखवाड़ा के अंतर्गत पोषण रैली (Poshan Rally) का आयोजन Organized a Poshan Rally under the Nutrition Fortnight

पोषण पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 09 अप्रैल से 23 अप्रैल, 2026 तक देशभर में मनाया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य आम जनमानस में पोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा कुपोषण की समस्या के समाधान हेतु सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करना है। इसी क्रम में भा.वा.अ.शि.प. - हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 20 अप्रैल, 2026 को प्रातः 11:00 बजे एक पोषण रैली (Poshan Rally) का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. मनीषा थपलियाल के प्रेरणादायक वक्तव्य के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने पोषण पखवाड़ा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष पोषण पखवाड़ा मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य पोषण स्तर में सुधार करना है। यह अभियान “जीवन के पहले छह वर्षों में मस्तिष्क विकास को अधिकतम करना” विषय पर केंद्रित है और परिवारों व समुदायों को बच्चों के स्वस्थ शारीरिक एवं मानसिक विकास के प्रति जागरूक करने का प्रयास करता है। उन्होंने संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या एवं स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि कुपोषण एक गंभीर सामाजिक समस्या है, जिसके समाधान के लिए प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है।

इसके उपरांत पोषण रैली का प्रारंभ संस्थान के कार्यालय मुख्य द्वार से किया गया, जो निर्धारित मार्ग से होते हुए सर्घीण तक संपन्न हुई। रैली के दौरान प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न जागरूकता नारों एवं संदेशों के माध्यम से लोगों को संतुलित एवं पौष्टिक आहार के महत्व, कुपोषण की रोकथाम तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। ‘पूर्ण पोषण की शुरुआत, शुद्ध जल और स्वच्छता के साथ’, ‘जंक फूड छोड़ो, सेहत से नाता जोड़ो’, ‘संतुलित आहार, जीवन का आधार’, ‘सही पोषण, बेहतर जीवन’ एवं ‘कुपोषण मुक्त भारत, स्वस्थ भारत’ जैसे नारों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इस कार्यक्रम में संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रोजेक्ट स्टाफ सहित कुल 40 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों ने अनुशासन एवं ऊर्जा के साथ रैली को सफल बनाया तथा समाज में पोषण संबंधी जागरूकता फैलाने में सक्रिय योगदान दिया। रैली का मुख्य उद्देश्य आम जनमानस को यह संदेश देना था कि शिशु एवं मातृ स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर कुपोषण को रोका जा सकता है तथा एक स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है।



